प्लासी का युद्ध (23 जून 1757 ई.)

- प्लासी का युद्ध, भारत के इतिहास में एक-नए साम्राज्यिक और वैचारिक वर्चस्व के संघर्ष का आरंभ था।
- वैयक्तिक स्वार्थ केन्द्रित लोलुपता और, राजनीतिक महत्वाकांक्षा के दरबारी षडयंत्र ने सिराजुद्दौला की बलि लेकर 'क्लाइव के गधे' मीर जाफर को बंगाल का कठपुतली नवाब और ईस्ट इण्डिया कम्पनी को वास्तविक और अप्रत्यक्ष शासक बना दिया।

पृष्ठभूमि

- अलीवर्दी खाँ ने अपनी तीनों बेटियों और उनके पुत्रों में सिराजुद्दौला को सबसे योग्य परखकर अपना उत्तराधिकारी घोषित किया।
- सिराजुद्दौला ने बंगाल की सत्ता हाथ में आते ही दरबार और प्रशासनिक संरचना को पुनर्विन्यस्त करने का प्रयास किया।
- सिराजुद्दौला के इन प्रयत्नों को परंपरागत अभिजात वर्ग और धनाढ्य व्यापारियों ने शंका की दृष्टि से देखा।
- सिराजुद्दौला की मौसी और चाची घसीटी बेगम के अपने मातहत से अनैतिक सम्बन्धों के बारे में जानकर सिराजुद्दौला ने उस मातहत को मृत्युदण्ड दे दिया।
- घसीटी बेगम ने अपने सम्पत्ति प्रबंधक रायदुर्लभ के पुत्र कृष्णवल्लभ के हाथ अपनी सारी सम्पत्ति कलकत्ता में अंग्रेजों के संरक्षण में भेज दी, जिससे सिराजुद्दौला उसे अपने अधिकार में न ले सके।
- घसीटी बेगम ने अपने भतीजे पूर्णिया के नवाब शौकत जंग के साथ मिलकर सिराजुद्दौला को अपदस्थ करने के लिये षडयंत्र रचा, किन्तु सिराजुद्दौला को इसका पता चल गया।
- सिराजुद्दौला ने सेना भेजकर शौकत जंग को हराया और घसीटी बेगम को एक महल में नजरबंद कर दिया।
- अंग्रेजों और फ्रांसीसी कम्पनियों द्वारा अपनी फैक्ट्रियों की किलेबंदी करने पर और मुगल बादशाह द्वारा प्रदत्त व्यापारिक छूटों का ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा दुरुपयोग करने पर, सिराजुद्दौला ने इसे रोकना चाहा।
- फ्रांसीसी तो मान गये पर ईस्ट इंडिया कम्पनी ने किलेबंदी करना, व्यापारिक छूटों का दुरुपयोग करना और बंगाल के विद्रोहियों को शरण देना जारी रखा।
- सिराजुद्दौला ने क्रोधित होकर कलकत्ता पर आक्रमण कर, अधिकार कर लिया।
- अफगानों के आसन्न आक्रमण से आशंकित होकर और अंग्रेजी कम्पनी को मित्र बनाने के उद्देश्य से सिराजुद्दौला ने कम्पनी से मित्रता की।
- क्लाइव ने बंगाल पर आक्रमण करने का निश्चय कर लिया था, इसी क्रम में उसने सिराजुद्दौला से नाराज और महत्वाकांक्षी लोगों को अपने साथ लाने का प्रयत्न किया।
- रायदुर्लभ, जगतसेठ और मीरजाफर ने क्लाइव की योजना में सहमति और सहायता देना स्वीकार किया।
- 23 जून 1757 ई. को हुए युद्ध में मीरजाफर के नेतृत्व में सेना का एक बड़ा भाग तटस्थ रहा और मीरजाफर की सलाह पर सिराजुद्दौला युद्ध क्षेत्र छोड़कर चला गया।